Roll No. ....

Total No. of Questions : 4] [Total No. of Printed Pages : 3

(1048)

UG (CBCS) RUSA VIth Semester Examination

950

SANSKRIT

(Upnishad Tatha Vyakaran)

(Core/Elective/Additional)

Paper : BASKT-0667

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : 70

इकाई-क

1. अधोलिखितानां प्रश्नाणां उत्तराणि एकपदेन अथवा अतीव संक्षेपण लिखत–

(क) नचिकेताः ज्ञानाय कम् पार्श्वे अगच्छत् ?

(ख) नचिकेताः प्रथम वर रूपेण किं अयाचत् ?

(ग) कठोपनिषदस्य प्रथमे अध्याये कति वल्लयः सन्ति ?

(घ) संसार स्वरूप अश्वत्थ वृक्षस्य वर्णनं कस्मिन् अध्याये अस्ति ?

(ङ) परमात्मने स्वरूपस्य विवरणं कस्मिन् अध्याये अस्ति ?

(च) सह वीर्यं ....

(छ) तद् (पुल्लिङ्ग)—इत्यस्य शब्दस्य द्वितीया विभक्तेः रूपाणि लिखत।

(ज) किम् (स्त्रीलिंङ्ग)—इत्यस्य शब्दस्य चतुर्थी विभक्तेः रूपाणि लिखत।

(झ) स्मृ (लोट्लकार)—धातोः मध्यम पुरुषस्य रूपाणि लिखतः।

(ञ) 'हम सब लिखते हैं'—अनुवादं कुरु। 2×10=20

इकाई-ख

2. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लगभग **25–25** शब्दों में लिखिए–

(क) उद्दालक ऋषि ने पुत्र नचिकेता को यमराज को क्यों दिया ?

(ख) यमराज द्वारा दिए गए तृतीय वर का वर्णन कीजिए।

(ग) श्रेय और प्रेय के भाव को स्पष्ट कीजिए।

(घ) परमेश्वर दर्शन में इन्द्रियों की बहिर्मुखता किस प्रकार विघ्न कारक होती है ? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) युगपद्, सायम्, स्वयम् अव्ययों का प्रयोग कर संस्कृत में दो वाक्य बनाइए। 5×4=20

इकाई-ग

3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लगभग **50** शब्दों में लिखिए (केवल तीन)–

(क) यमराज द्वारा नचिकेता को आत्मतत्व विषयक प्रश्न के बदले क्या-क्या प्रलोभन दिए गए, स्पष्ट कीजिए।

(ख) परब्रह्म परमात्मा की महिमा का वर्णन कीजिए।

(ग) आत्मा के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

(घ) एतद् (पुल्लिंङ्ग) शब्द रूप लिखिए।

(ङ) पा (लोट्लकार) तीनों पुरुषों में रूप लिखिए। 5×3=15

इकाई-घ

4. निम्नलिखित पद्यों का हिन्दी में सरलार्थ कीजिए–

(क) पीतोदका जग्घतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।

अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्॥

(ख) अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथापरे।

सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः॥

अथवा

(क) यथा पुरस्ताद् भविता प्रतीत

औद्दालकिरारूणि र्मत्प्रसृष्टः।

सुखं रात्रीः शयिता वीत मन्यु-

स्त्वां ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम्।

(ख) बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः।

किंस्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति॥ 15